

संतुलन >>> लॉ और लव में, ज्ञान और योग में, सेवा और स्व-उन्नति में, बालकपन और मालिकपन में रखें सन्तुलन



ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

संतुलन की आवश्यकता जीवन में

संतुलन की शक्ति (बैलेन्स)- जिसको बाबा कहते हैं बैलेन्स। हम इसको नियन्त्रण शक्ति भी कह सकते हैं। कहीं लॉ ज़्यादा यूज़ करते हो तो उसको कंट्रोल करें तब तो बैलेन्स होगा।

नियन्त्रण करो और सन्तुलन रखो बाबा ने कहा है, लॉ और लव में, ज्ञान और योग में, सेवा और स्व-उन्नति में, बालकपन और मालिकपन में सन्तुलन रखो। यह शक्ति सब में है। बच्चा हो, बूढ़ा हो सब में सन्तुलन करने की शक्ति होती ही है। जैसे बच्चा कोई गलती करता है, तो उसका बाप डाँटता है, दुबारा न करने की सावधानी देता है। जब बच्चा देखता है कि बाप बहुत गुस्से में है, तो चुप हो जाता है, कुछ बोलता नहीं है। क्योंकि वह

जानता है कि कुछ बोले तो इस बार थप्पड़ खाना पड़ेगा। इस प्रकार, उसमें भी नियंत्रण करने की शक्ति है कि इस बार मुझे चुप रहना है। योगी जीवन के लिए हमें जिन बातों में बाबा ने सन्तुलन रखने के लिए कहा है, उनमें सन्तुलन रखना बहुत ज़रूरी है, नहीं तो हम अपनी मंज़िल प्राप्त नहीं कर सकेंगे। बाबा यह भी कहते हैं कि बच्चे, कम बोलो और धीरे बोलो। कई लोग इतना बोलते हैं कि जैसे कथाकार, कीर्तनकार बोलते हैं। सुनने वालों को समझ में नहीं आता। कहते हैं ना, पूरी रामायण सुनी बाद में सुनने वाले ने सुनाने वाले से पूछा कि राम-सीता का क्या सम्बन्ध है। क्योंकि कीर्तनकार रामायण सुनाते-सुनाते बीच-बीच में कथा में उपकथा, उस उपकथा में और एक उपकथा सुनाते चला गया जिससे कि

सुनने वाले को मूल कथा समझ में ही नहीं आयी। कथा सुनने में ही वह मगन हो गया अथवा ऊब करके उदासी, झुटका भी खा लिया होगा, तो मूँझ कर उसने पूछा होगा कि राम-सीता का क्या सम्बन्ध है। इस प्रकार, बातें करते समय हमें नियंत्रण रखना चाहिए और सन्तुलन भी रखना चाहिए।

इसके अलावा और दो शक्तियाँ हैं हल्का करना और भारी करना। कई बार क्या होता है कि कोई बात हो गयी, तो कई लोग कहते हैं, क्या हुआ, छोड़ो इस बात को। बात बड़ी होती है लेकिन कई लोग स्वयं बड़े होते हैं। उनमें इतनी ताकत और विशाल मन होता है कि वे कह देते हैं, कर लेंगे, क्या बड़ी बात है! समझ लीजिये, किसी को 10000 रुपये का नुकसान हो गया। वह उदास होकर स्थिर

ही पड़ जाता है। घर वाले कहते हैं, छोड़ दो ना, दस हजार रुपये तो गये लेकिन आपकी तो जान बच गयी। मगर वह कहता है कि तुम्हें क्या पता उन रुपयों को मैंने कितनी मेहनत से कमाया था। लेकिन उस व्यक्ति को सोचना चाहिए कि किस को महत्व देना चाहिए, किसको नहीं! पैसे को महत्व देना है लेकिन जहाँ जितनी आवश्यकता है उतना ही दो। कम देने के समय ज़्यादा महत्व देने से और ज़्यादा देने के समय पर कम देने से नुकसान होता है। उदाहरण के तौर पर बाबा कहते हैं कि इन ईश्वरीय महावाक्यों का महत्व जानो और उनका यूज़ करो। हमें सोचना है और ध्यान देना है कि यह कौन कह रहा है। सर्वशक्तिवान, त्रिकालदर्शी, ज्ञान का सागर कह रहा है, ये उनके महावाक्य हैं। तब हमें उन महावाक्यों का लाभ भी होगा। अगर कोई साधारण व्यक्ति सुनता है तो कहेगा कि छोड़ो जी, छोड़ो, यह क्या बड़ी बात है। हमारा कीमती समय चला जा रहा है। इस प्रकार, ज्ञान का महत्व जानना-यह है भारी करने की शक्ति।

कोई व्यक्ति आपको गाली-गलौच दे रहा है, टॉट कस रहा है। उसको आप क्या करेंगे? उसकी बातों को ज़्यादा महत्व देंगे? ज़्यादा महत्व देना अर्थात् भारी करने की शक्ति यूज़ करना, इससे आपकी अवस्था ही खराब हो जायेगी और आगे जाकर लड़ई-झगड़ भी हो सकता है। उस समय हमें उससे टकराना थोड़े ही है! यहाँ पर हमें हल्का करने की शक्ति यूज़ करनी चाहिए कि छोड़ो जी, उसका संस्कार ही ऐसा है। वो तो सबको ऐसे ही बोलता रहता है। ऐसा समझ कर उन बातों पर ध्यान नहीं देना-यह हल्का करने की शक्ति है।

ऐसे ही बाबा की मुरली को महत्व देना और हमारी बड़ी बहनें अथवा दादियाँ हमारे हित के लिए कुछ कहती हैं तो उन

बातों को महत्व देना, इनमें हमें भारी करने की शक्ति इस्तेमाल करनी चाहिए। इसी प्रकार, लौकिक जीवन में भी कई कष्ट और परिस्थितियाँ भी आ जाती हैं। उनको महत्व देना अथवा उनको गौण करना हमारे हाथ में है। हमें किसको महत्व देना चाहिए और किसको नहीं देना चाहिए इस पहचान-शक्ति को ही भारी करने की और हल्का करने की शक्ति कहते हैं। कोई बात को हल्की समझना और भारी समझना आपके ऊपर है, आपकी बुद्धि की समझ के ऊपर आ गयी तो वो एकदम उदास और निराश हो जाते हैं। कोई पूछेंगे तो कहेंगे, हाँ जी, क्या करें, ऐसा हो गया! वैसी ही समस्या और किसी के ऊपर आ गयी तो वो निश्चिंत रहता है और समझता है कि छोड़ो जी, बाप मिला तो सब कुछ मिल गया। यह समस्या आ गयी तो क्या हुआ! मेरे साथ मेरा संरक्षक तो सर्वशक्तिवान बाप है, मेरा जिम्मेवार तो वो है, मुझे क्या चिन्ता! हम तो बाबा की गोद में बैठे हुए हैं।

हमें यह ध्यान रखना है कि हम अपने कर्म ठीक रखें, श्रेष्ठ कर्म करें। वह भगवद् शक्ति पर निश्चयवान होने के कारण निश्चिंत रहता है। अगर हमने किसी बात को हल्का करना और भारी करना जान लिया और सीख लिया तो पुरुषार्थ तीव्र गति पकड़ लेगा।



जोधपुर-हाउसिंग बोर्ड(राज.)। केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शुचि बहन।



बेंतिया-बिहार। बिहार की प्रथम महिला उप-मुख्यमंत्री रेनु देवी को रक्षामूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजना दीदी।



मोहाली-पंजाब। बलबीर सिंह सिद्धू हेल्थ एंड फैमिली वेलफेयर एंड लेबर मिनिस्टर पंजाब को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रमा दीदी, सेवाकेन्द्र संचालिका, रोपड़।



सिधौली-सीतापुर(उ.प्र.)। केन्द्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर जी को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रश्मि बहन।



जयपुर-राजापार्क(दुर्गापुरा)। राज्यसभा सांसद डॉ. किरोडी लाल मीणा को रक्षामूत्र बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. सन्नू बहन।